International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 397-399

डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'बालिवध' का मौलिक वस्तुविन्यास

डॉ0 निखिल उपाध्याय
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कविता में डॉ0 राम कुमार वर्मा जिस काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते है, इसमें प्रबन्ध काव्यों की रचना को वरीयता पर नही रखा गया था। वह छायावादी काव्यधारा का परवर्ती युग था, जिसे 'उत्तर छायावाद' भी कहा जाता है। इसमें स्वच्छन्द प्रेम, सौन्दर्य चेतना तथा सुकुमार भावना वाले गीत ही अधिक रचे गये। वर्मा जी का गीत–मुक्तक काव्य जितना है, वह इसी कोटि का है। परन्तु इसके साथ ही प्राच्य भारतीय आख्यानों के ममस्पर्शी कथावृत्तों को अपने गम्भीर विचारों के नये प्रस्थानों के रूप में उपस्थापित करना भी उनकी काव्य सृजन सम्बन्धी गहरी अभिलाषा का महत्वपूर्ण भाग है उनके द्वारा प्रणीत तीन प्रबन्धकाव्य (एकलव्य, उत्तरायण, ओ अहल्या) तथा पाँच लघुकाय प्रबन्ध (बालि वध, संत रैदास, निशीथ, वीर हमीर, चित्तौड़ की चिता) इसके साक्ष्य हैं।

अपनी काव्य रचनाओं में डॉ0 रामकुमार वर्मा ने कई ऐसे प्रसंगों को अपनी रचनाओं में उभारा है, जिन पर विद्वानों में मतैक्य नहीं है। शायद यही वजह थी कि उन्होंने 'एकलव्य' लिखा, अहिल्या की कथा के विवाद को अपने प्रबन्ध 'ओ! अहल्या' में सुलझाया। इसी प्रकार वर्मा जी का एक ओर लघु प्रबन्ध सामने आता है, जो कि रामकथा की एक प्रमुख समस्या सामने रखता है। इस लघु प्रबन्ध का नाम वर्मा जी ने 'बालिवध' रखा है। वर्मा जी ने इसकी रचना 1989 में की थी। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट हो रहा है कि इस रचना में रामकथा का बलि–वध प्रसंग वर्णित है। इस रचना के माध्यम से कवि ने उस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश की हे कि श्री राम ने बालि केा विटप ओट से क्यों मारा? जबकि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को भारतीय संस्कृति में एक आदर्श पुरुष के रूप मे देखा जाता है। फिर ऐसे आदर्श मानव ने ऐसा विवादास्पद कार्य क्यों किया? देवर्षि नारद ने वाल्मीकि को श्री राम के बारे में कहा था– 'इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न श्री रामचन्द्र को सभी जानते हैं। श्रीराम ने नियत स्वभाव वाले, अत्यन्त तेजस्वी तथा मन को वश में करने वाले हैं।' इतना ही नहीं एक प्रश्न के उत्तर में नारद जी यह भी कहते हैं–

'धनदेन समस्त्यागे, सत्यं धर्म इवापरः
तमेवेगुण सम्पन्नं राम सत्य पराक्रमम्।'[2]

इतने आदर्श गुणों से युक्त चरित्र वाले श्री राम जी ने आखिर ऐसा कार्य क्यों किया कि मानस में तुलसी को लिखना पड़ा–

'बहु छल बल सुग्रीव कर हिय हारा भय मानि
मारा बालि राम तब, हृदय माँझ सर तानि।'[3]

डॉ0 रामकुमार वर्मा के इस काव्य में मंगलाचरण के बाद प्रेरणा, प्रवेश और मंगलारंभ ये तीन अंग है। प्रारम्भ में मंगलाचरण में कवि ने भगवान श्री राम के अनन्य भक्त पवनसुत हनुमान का गुणगान किया है तथा उनसे आशीष माँगा है। मंगलाचरण के बाद 'प्रेरणा' खण्ड आता है,जिसमें कवि ने भगवान श्री राम की प्रार्थना की है तथा आशीर्वाद स्वरूप यह आज्ञा प्राप्त की है कि वे बालिबध प्रसंग के विषय में लिख सकते हैं। श्री राम जी ने मुस्कुराते हुये वर्मा जी को आज्ञा दी है–

''तुम लिखो हे वत्स! मेरी सत्य गाथा।''[4]

प्रेरणा के बाद 'बालिवध' खण्डकाव्य में प्रवेश' खण्ड सामने आता है जिसमें वर्मा जी ने भगवान श्री राम को सौम्य भाव से खड़े दिखाया है। उन्हीं के पास वानरों की सेना खड़ी है तथा वहीं पास में जामवन्त, अंगद, सुग्रीव, हनुमान आदि भी खड़े हैं। सभी के मन में एक ही शंका थी, परन्तु किसी के पास उसका समाधान न था। उसी समाधान के लिए सब श्री राम जी के पास खड़े थे। सभी के चेहरे पर प्रसन्नता थी, क्योंकि बालिवध हो चुका था, परन्तु सबकी मुख–मुद्रा पर एक प्रश्न था कि आखिर इतने शक्तिशाली तथा धर्म का पक्ष लेने वाले कोसलेश ने बालि को पेड़ की आड़ से क्यों मारा? वे चाहते तो सामने युद्ध करके भी उसे पराजित कर सकते थे, फिर ऐसा कृत्य क्यों?

''वानरों को शंका थी कि बालि ने सुग्रीव को
जब किया व्याकुल था भारी वज्र चोट से
तब पूर्ण शक्तिशाली कोसलेश राम ने
बालि को क्यों मारा बाण
छिप कर ओट से?''[5]

कवि श्री वर्मा जी ने अगले खण्ड का नाम 'मंगलारम्भ' रखा है। इस नाम के पीछे सम्भवतः यही कारण होगा, क्योंकि भगवान श्री राम की वाणी ही मंगल करने वाली है और इसी खण्ड मे राम अपने श्रीमुख से सम्मुख खड़े वानरों की शंका का समाधान करते हैं। सर्वप्रथम श्री राम कहते हैं– *'हे वन्धुओं, मैं तुम्हारे मन में उठ रहे सन्देह को जानता हूँ। मैंने क्यों सुग्रीव से स्नेह किया? क्यों अभिमानी बलशाली को विटप की ओट से मारा?''* श्री राम आगे स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि जब उन्होंने बालि को छिप कर मारा, तो उन्हें 'व्याध' कहकर सम्बोधित किया गया, जबकि व्याघ कहने वाला बालि स्वयं एक अपराधी था। साथ ही राम 'व्याध' शब्द को स्पष्ट करते हैं कि व्याध वह है, जो छिपकर वार करे, चाहे दिन हो या रात। परन्तु जब बालि जानता था कि सुग्रीव अकेला नहीं है, तो मैं व्याध कैसे हुआ? वास्तव में वर्मा जी ने इस विषय पर काफी मन्थन करने के बाद यह खण्डकाव्य लिखा और श्री राम चन्द्र के मुख से उन्होंने अपने समस्त विचार पाठकों तक पहुँचाये हैं। उन्होंने इस बात को भी स्पष्ट किया कि इस बात का पक्का साक्ष्य है कि

बालि को श्री राम की उपस्थिति की अनुभूति हो चुकी थी। यह बात वह अच्छे तरीके से जानता था कि सुग्रीव की मित्रता श्री राम से हो चुकी थी। घायल सुग्रीव को माला पहनाकर पुनः बालि से युद्ध करने वाला और कौन हो सकता था? बालि को हनुमान द्वारा श्रीराम तथा लक्ष्मण के लाये जाने की भी जानकारी थी। यदि यह सब कुछ देर के लिए न मानें, तब भी बालि की पत्नी तारा ने जाते–जाते पूर्ण विश्वास से बालि को सम्बोधित किया था–

''अब करेगें वीर दोनों आपका मद चूर्ण
काल को भी घोर रण में ये सकेंगे जीत
इसलिए इनको बना लें आप अपना मीत।।''[6]

इन सबके बावजूद बालि अपने अहंकार में मत होकर आया। इन बातों के साथ श्रीराम ने इस प्रश्न का भी उत्तर दिया, जो कि तुलसी ने मानस में उठाया था–

''धर्म हेतु अवतरेउ गोसाईं
मारेउ मोहि व्याध की नाई।''[7]

पहली शंका का समाधान होने के बाद अब दूसरा प्रश्न यह उठता है कि श्री राम ने दो भाइयो के मध्य युद्ध में हस्तक्षेप क्यों कि ? वर्मा जी ने इस बात को स्पष्ट करते हुये कहा है कि जब श्री राम के वनवास की अवधि एक वर्ष से कम रही गयी थी, तभी सीता का हरण हो गया। जटायु ने बताया कि लंकापति रावण ने यह कुकृत्य किया है। रावण का साम्राज्य बहुत बड़ा था। देव, यक्ष, किन्नर सभी उसके दास थे। मेरे लिए अकेले सीता की सुरक्षा बहुत मुश्किल थी, समय की भी कमी थी। यदि श्री राम बालि को ललकारते, तो निश्चित रूप से श्रीराम की सेना भी घायल होती। साथ में यह युद्ध कितने समय तक चलता, यह बात भी निश्चित नहीं थी। यदि बाद में 4–5 लोग ही बचते, तो फिर सेतु बनाने का कार्यक्रम कैसे सम्पन्न होता? रावण से युद्ध कैसे होता? बिना युद्ध सीता की मुक्ति कैसे सम्भव थी? सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि यदि रावण–बध न होता, तो जगत का कल्याण कैसे होता? इससे यह बात सामने आती है कि उतने बड़े कल्याणकारी कार्य के लिए यह कदम उचित था। वर्मा जी ने यहाँ इस बात को पूर्णतः तर्क संगत बना कर रखा है कि यदि श्री राम को रावण–वध करने में समय लगता, तो माता सीता का वियोग चरम स्तर पर पहुँच सकता था। वह विरह सीता के जीवन बचने पर भी प्रश्न चिन्ह लगा सकता था। दूसरी तरफ श्रीराम को यह बात भी चिन्तित कर रही थी कि भरत, जो कि इस समय अयोध्या में श्री राम की चरण पादुका रखकर राज्य के समस्त कार्य प्रतिनिधि रूप में कर रहे हैं, श्रीराम के न पहुँचने पर चिन्तित हो जाएगें। भरत ने चित्रकूट में कहा भी था–

''वनवास की अवधि बीत जाने पर भी
आये नहीं आप तो करूँगा आत्मदाह मैं।''[8]

इन्हीं सब कारणों से श्री राम के सम्मुख और कोई विकल्प न था।डॉ0 रामकुमार वर्मा के लघुकाय प्रबन्ध–काव्यों में 'बालिबध' अपना अलग स्थान रखता है, क्योंकि खण्डकाव्यों यह अकेला है, जो कि रामकथाश्रित है। इस खण्डकाव्य की भाषा सरल खड़ी बोली है। छन्दों का वैविध्य इस खण्डकाव्य में नहीं है। इस खण्डकाव्य में वर्मा जी ने अपनी शब्द–चयन क्षमता के उत्कृष्ट होने के कई प्रमाण दिये हैं। यह खण्डकाव्य नाटकीयता के गुणों को भी अपने अन्दर समाहित करते हुये दिखता है, क्योंकि प्रारम्भ का मंगलाचरण, प्रेरणा, प्रवेशक, मंगललारम्भ ये सभी खण्ड नाट्यशास्त्र के तत्वों से कुछ मिलते–जुलते प्रतीत होते हैं। प्रेरणा में श्री राम जी की आज्ञा को प्राप्त करना भी कुछ ऐसा ही लगता है।

''तुम लिखो हे वत्स! मेरी सत्य गाथा
एक लघु मुस्कान ले प्रभु सहज बोले।''[9]

नाटकीय होने के साथ–साथ खण्डकाव्य में कई ऐसी पक्तियाँ है, जिन्हें पढ़ते समय पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह प्रसंग वास्तव में आखों के सामने चल रहा हैं। खण्डकाव्य के इस गुण को हम 'चित्रात्मकता' कह सकते हैं। बानरो से बातचीत करते समय श्री राम के मुख से जब सीता का नाम उच्चरित होता है, तो वे क्षण भर रूक जाते हैं, आँख से दो बूँद आँसू भी निकलते हैं, लेकिन तुरन्त ही राम स्वयं को सम्हालते हैं और आगे कहते हैं–

'कुछ क्षण बाद ले सांस गहरी
बोले श्री राम फिर साथ लक्ष्मण के
खोज की, पुकारा–सीत–सीते! तुम हो कहाँ
क्या तुम गयी हो देवि गोदावरी के तीर।''

इस प्रसंग में हम यह देख सकते है कि वर्मा जी ने कितना मार्मिक और स्वाभाविक वर्णन किया है। ऐसे विरह में व्यक्ति का गला रूंध जाना कितना सहज है।
अलंकारों की दृष्टि से यदि खण्डकाव्य को परखें तो यह तथ्य सामने आता है कि यद्यपि यह अलंकार प्रधान काव्य नहीं है, पर कुछ प्रभावशाली प्रयोग है। तात्पर्य यह है कि भाषा में अलंकरण या चमत्कार पैदा करने के लिए कोई विशेष प्रयत्न नहीं किया गया है। यही कारण है कि अनुप्रास, श्लेष, उपमा, रूपक इत्यादि प्रायः दृष्टि के सामने आ जाते हैं।

'नील इंदीवर सदृश थे नेत्र नीचे
मातृ पद पर भी बही प्रेमाश्रु धारा।'[10]

यदि हम इस बात पर विचार करे कि डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा रचित इस खण्डकाव्य की कथा का आधार क्या है? तो यहाँ एक बात स्पष्ट करनी पड़ेगी कि रामचरितमानस, बाल्मीकि रामायण सहित अनेक रामकथाओं में इस घटना की चर्चा है। वाल्मीकि रामायण में कहते हैं–

'अस्य त्वं धर्माणस्य सुग्रीवस्य महात्मन,
रूमायां वर्तसे कामात् स्नुषायां पापकर्मकृत।'[11]

तुलसी ने इस प्रसंक को मानस के किष्किन्धा काण्ड में उठाया है। तुलसी के राम बालि से कहते हैं–

'अनुज वधू भगिनी सुत नारी, सुनु सठ कन्या सम ये चारी।
इनहिं कुदृष्टि विलोकई जोई, ताहि बधे कछु पाप न होई।।'[12]

अध्यात्म रामायण मे भी बालि का वध करने के वे सभी कारण दिए गये हैं, जो कि मानस में है। बाल्मीकि के राम छिपकर मारने के प्रश्न का उत्तर इस प्रकार देत है– 'हे हरि यूथप! मैंने तुम्हें छिपकर मारा है, इसके लिए न तो मुझे सन्ताप है, न कोई विचार है, क्योंकि आखेटक फन्दे से अनेक मृग पकड़ते है।'[13]
इस प्रश्न का उत्तर कम्ब रामायण में लक्ष्मण देते हैं। इसी प्रसंग में

अध्यात्म रामायण में राम को बालि 'चोरवत्' कह कर सम्बोधित करता है। कृतिवास रामायण में भी इस प्रसंग पर बालिबध के इस रूप को उचित ठहराया गया है–

'पृथिवी ते यत राजा आछे युगे–युगे। दयाकरि कोन राजा छाड़ियाहे मृग।
घास खाय बने चरे नहि अपराध। तबु मृग मारते राजार हय व्याध।'[14]

पात्रों की दृष्टि से विचार करें तो खण्डकाव्य में कई पात्र हैं जैसे कि– सुग्रीव, जामवन्त, लक्ष्मण, श्री राम इत्यादि परन्तु श्री राम को छोड़कर शेष गौड़ है। भारतीय वांङमय में श्रीराम जैसा चरित्र शायद ही कोई हो। श्री राम एक आदर्श पुरुष के सभी गुणों से युक्त हैं। वे सम्मुख खड़े वानरों की शंका का समाधान करते हैं तथा शीघ्र ही बोलते हैं–

'बन्धुओं! मन में तुम्हारे उठ रहा सन्देह
विकल मन सुग्रीव से मैनं किया क्यों स्नेह।
क्यों विटप की ओट से कर तीक्ष्ण शर संधान
बालि को मारा कि अतिशय था जिसे अभियान।'[15]

श्री राम एक आदर्श पति भी हैं। वे सीता को खोजने के लिए यत्र–तत्र भटक रहें हैं। उन्हें केवल इतना जटायु ने बताया था कि लंकेश रावण सीता को हर ले गया है। वे बहुत दुखी हैं तथा एक सामान्य मानव की तरह रोते भी हैं–

'सीता शब्द आया ज्यों ही कंठ पर सहसा
लोचनों में अश्रुओं के बिन्दु लघु छलके।'[16]

डॉ वर्मा के श्री राम नीति कुशल भी हैं। उन्होंने बालि को विटप की ओट से मारकर अनेक समस्याओं का एक साथ समाधान किया। वे वानरों से कहते हैं–

'इसलिए मेरी इस युक्ति पूर्ण नीति से
तीन व्यक्तियों के प्राणों की सुरक्षा हो गयी
मित्र सुग्रीव, सीता और भरत भाई की
प्रण मेरा था जो नीति से निभाया है।'[17]

बालिवध खण्डकाव्य के नायक श्रीराम एक विरही, स्थितप्रज्ञ, नीतिकुशल रूप में सामने आते है। श्री राम के अतिरिक्त हनुमान का चरित्र एक क्षण के लिए सामने आता है।

डॉ0 वर्मा जी के इस लघु प्रबन्ध की पूर्ण विवेचना के बाद अब एक प्रश्न यह उठता है कि इस रचना का उद्देश्य क्या हो सकता है? वास्तव में यह एक समस्या मूलक काव्य है। लेकिन वर्मा जी ने इस समस्यामूलक काव्य में भी मार्मिकता से जो वर्णन किया है वह अद्भुत है। चाहे वह बालि का संवाद हो, या श्रीराम की आँखों में आँसू आने का प्रसंग हो। हर जगह वर्मा जी का वर्णन अत्यन्त मार्मिकता से जो वर्णन किया है वह अद्भुत है। भारतीय साहित्य में राम का चरित्र गरिमामय है, परन्तु विटप ओट से बालिबध के बारे में राम के चरित्र पर कुछ जो आक्षेप की कोशिश यत्र–तत्र की गयी थी, यह खण्डकाव्य उन्हीं आक्षेपों का समाधान करता है। वर्मा जी ने लिखा है– ''श्री राम ने विटप ओट से बालिबध क्यों किया? इसका क्या औचित्य था? इसके स्पष्टीकरण के लिए अनेक विद्वानों, रामकथा के प्रेमियों और मित्रों का आग्रह था, सारी परिस्थितियों पर विचार करने के बाद में इसी निष्कर्ष पर पहुँचा कि श्री राम का बानर बालि को विटप ओट से मारना ही एक विकल्प था। इसी दृष्टि से मैंने इस काव्यांग की रचना की है।''

वास्तव में पूरे खण्डकाव्य के विवेचन करने के बाद यह बात पूर्ण विश्वास के साथ कही जा सकती है कि कवि ने तर्कपूर्वक इस बात को सिद्ध किया है कि श्री राम द्वारा विटप ओट से बालिबध अनुचित नहीं था। वर्मा जी का यह खण्डकाव्य अनेक विशेषताओं का समेटता हुआ, उनकी सफल कृतियों में प्रतिष्ठित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड–1/8
2. वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड–1/19
3. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड, दोहा–8, चौपाई–5
4. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली, पृष्ठ–23
5. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली, पृष्ठ–25
6. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली, पृष्ठ–30
7. रामचरितमानस, किष्किन्धाकाण्ड,दोहा –8, चौपाई –5
8. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृष्ठ –44
9. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली (प्रेरणाभाग), पृष्ठ–446
10. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा, पृष्ठ –446
11. वाल्मीकि रामायण, पृष्ठ –5/18
12. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास जी, किष्किन्धाकाण्ड,दोहा–08, चौपाई –08
13. वाल्मीकि रामायण, पृष्ठ–4/18
14. श्री रंगनाथ रामायण, अनुवादक–भीमसेन निर्मल, पृष्ठ–523, 524
15. बालिवध, डॉ0 रामकुमार वर्मा, मंगलारम्भ, पृष्ठ–50
16. बालिवध (मंगलारम्भ), डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली, पृष्ठ–450
17. बालिवध (मंगलारम्भ), डॉ0 रामकुमार वर्मा रचनावली, पृष्ठ–455